प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

पन्तनगर। 21 मार्च 2024। विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजना ए.आई.सी.आर.पी. आन ई.ए.ए.आई के अन्तर्गत एक–दिवसीय किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन फार्म मशीनरी एवं पावर इन्जीनियरिंग विभाग में किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्राध्यापक एवं पी.आई. डा. आर. एन. पटैरिया ने ग्राम–कालूपूर पोखरिया, ब्लाक–हल्द्वानी, जिला–नैनीताल के अनुसूचित जनजाति के लगभग 20–25 किसानों को प्रशिक्षित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में चीड़ की पत्तियों तथा अन्य अवशिष्ट पदार्थो से ऊर्जा का वैकल्पिक साधन पर यह प्रशिक्षण दिया गया। चीड़ की पत्तियों से बायोचार बनाकर उनसे ब्रिकेट तैयार किये जाते है। इस तकनीक के उपयोग से बायोचार तथा बायोचार से कृतिम कोयला बनाया जाता है जिससे भविष्य में किसानों के लिए नव रोजगार भी उपलब्ध हो सकेगा जिससे किसानों की आय में वृद्वि होगी। यह ब्रिकेट न केवल चीड की पत्तियों के जंगल में आग के खतरों को कम करने में सहायक होगी बल्कि साथ–साथ पर्यावरण हितैशी भी है। इसमें खास बात यह है कि इसमें बिजली के उपयोग की कोई भी जरूरत नहीं होती है और यह उपयोग के दौरान धुआ रहित होता है। ऐसे बनेगी ब्रिकेटः कृषि यंत्र व प्रक्षेत्र अभियांत्रिकी विभाग के प्राध्यापक डा. राज नारायण पटैरिया ने बताया कि बायोचार यंत्र में चीड़ की पत्तियों या खपतवार एवं अन्य बायोमास को 50 से 60 फीसदी ही जलाया जाता है फिर दूसरी खेफ डाल दी जाती है और यह प्रक्रिया तब तक दोहराते है जबतक पूरा यंत्र भर जाए। इसके बाद ढक्कन को कीचड़ से पैक कर दिया जाता है जिसके बाद कोल पावडर यानी बायोचार निकलता है। इसमें पानी चिकनी मिट्टी और गोबर इत्यादि मिलाकर इसका पेस्ट बनाकर ब्रिकेटिंग मशीन के द्वारा ब्रिकेट तैयार किये जाते हैं। यह होगा फायदाः यह ईधन की लकड़ी के लिए पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों की मेहनत को कम करेगी। साथ ही जंगलों में आग के खतरों को भी कम करेगी। इससे दूरस्त पर्वतीय क्षेत्रों के ग्रामीणों की ईधन के लिए लकड़ी पर निर्भरता कम होगी और पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलेगी। ग्राम–कालूपूर पोखरिया के उक्त किसानों को प्रशिक्षण के बाद बायोचार यंत्र तथा ब्रिकेटिंग मशीन नि :शुल्क परियोजना के अन्तर्गत प्रदान की गयी।

किसानों को प्रशिक्षण की जानकारी देते डा. आर. एन. पटैरिया।

निदेशक संचार